४. शिवाजी महाराज का बचपन

शिवनेरी किले में शिवाजी महाराज का जन्म स्थान

शिवाजी महाराज का जन्म : उन दिनों चारों ओर अराजकता थी । उत्तर भारत से मुगल शासक शाहजहाँ ने दक्षिण को जीतने के लिए विशाल सेना भेजी थी । पुणे शहाजीराजे की जागीर थी । बीजापुर के आदिलशाह ने उसे ध्वस्त कर दिया था । शहाजीराजे अनेक कठिनाइयों से घिर गए थे-यहाँ कुआँ, वहाँ खाई । उनके जीवन में अस्थिरता आ गई थी ।

इन्हीं परिस्थितियों में जिजाबाई गर्भवती थीं तब यह प्रश्न सामने आया कि ऐसी अराजकता की स्थिति तथा भाग-दौड़ में उन्हें कहाँ रखें, तब शहाजीराजे को शिवनेरी किले की याद आई । उन्होंने जिजाबाई को शिवनेरी में रखने का निश्चय किया । पुणे जिले में जुन्नर के पास शिवनेरी यह अभेद्य किला है । उसके चारों ओर ऊँचे-ऊँचे टीले, मजबूत दीवारें तथा सुदृढ़ दरवाजे

थे । किला बहुत मजबूत था । विजयराज उसके किलेदार थे । वे भोसले के रिश्तेदारों में से थे । उन्होंने जिजाबाई की रक्षा का दायित्व अपने ऊपर लिया । शहाजीराजे ने जिजाबाई को शिवनेरी में रखा । इसके पश्चात उन्होंने मुगलों पर आक्रमण किया ।

....और फिर वह सुदिन आया । फाल्गुन वद्य तृतीया शक संवत् १५५१ अर्थात अंग्रेजी वर्ष के अनुसार १९ फरवरी १६३० के दिन शिवनेरी के नक्कारखाने में शहनाई और नगाड़े बज रहे थे । ऐसे मंगलमय समय पर जिजाबाई ने पुत्ररत्न को जन्म दिया । किले में लोग खुशी से झूम उठे । बच्चे का नामकरण हुआ । शिवनेरी किले में जन्म लेने के कारण बालक का नाम 'शिवाजी' रखा गया ।

शिवाजी महाराज का बचपन : शिवाजी महाराज के जीवन के प्रथम छह वर्ष बड़ी भाग-दौड़ में बीते । इस दौड़-धूप में भी जिजाबाई ने शिवाजी महाराज को बहुत उत्तम शिक्षा दी । संध्याकाल को वे दीया जलातीं । शिवाजी महाराज को पास बिठाकर उन्हें प्यार से सहलातीं । राम, कृष्ण, भीम और अभिमन्यु की कहानियाँ सुनातीं । संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव और संत एकनाथ के अभंग गाकर सुनातीं । शिवाजी महाराज को वीर पुरुषों की कहानियाँ अच्छी लगती थीं । वे सोचते थे कि बड़े होकर वे भी उनकी भाँति पराक्रम दिखाएँ । जिजाबाई उन्हें साधु-संतों के चरित्र की कहानियाँ भी सुनातीं । फलस्वरूप उनमें साधु-संतों के लिए श्रद्धा भाव उत्पन्न हुआ ।

गरीब मावलों के बच्चे शिवाजी महाराज के साथ खेलने के लिए आते थे । कभी-कभी शिवाजी महाराज भी उनकी झोंपड़ियों में

वीरमाता जिजाबाई बाल शिवाजी को कहानियाँ सुनाती हुईं ।

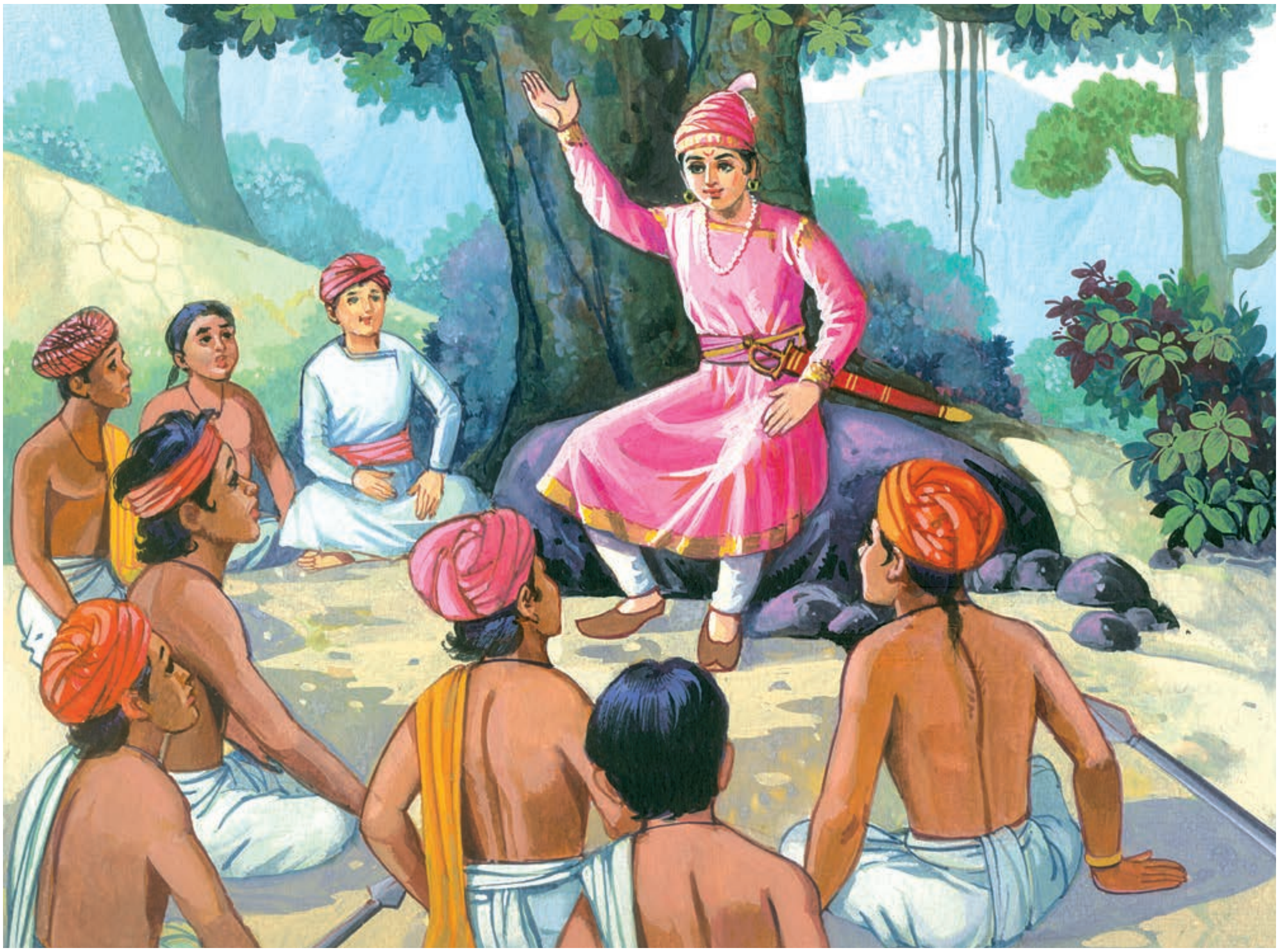

साथियों के साथ बाल शिवाजी

जाते । उनकी प्याज और रोटी बड़े चाव से खाते थे । उनके साथ मजेदार खेल खेलते थे । मावलों के बच्चे तो मानो जंगल के पक्षी थे । वे तोते, कोयल और शेर की हू-ब-हू बोली बोलते थे । मिट्‌टी के हाथी-घोड़े बनाना, किले बनाना आदि उनके प्रिय खेल थे । लुका-छिपी का खेल खेलना, गेंद और लट्‌टू चलाना ये खेल तो सदैव खेलते थे । उनके साथ शिवाजी महाराज भी ये खेल खेलते थे । मावलों के बच्चे शिवाजी महाराज को बहुत चाहते थे ।

शहाजीराजे मुगल शासक की ओर : शहाजीराजे निजामशाही में वापस लौटे किंतु वहाँ उन्हें शांति नहीं मिली । निजामशाह कान का कच्चा और अस्थिर वृत्ति का था । अतः दरबार में षडयंत्र और परस्पर ईर्ष्या-द्‌वेष उफान पर थे । इसी कारण निजामशाह के उकसाने पर लखुजीराव जाधव की भरे दरबार में हत्या की गई । इस घटना से क्रोधित होकर शहाजीराजे ने निजामशाही का त्याग किया और वे मुगलों के यहाँ चले गए । मुगल शासक शाहजहाँ ने उन्हें अपना सरदार बनाया ।

इसी बीच वजीर फतह खान ने मुगलों से साँठ-गाँठ करके निजामशाह की हत्या की । फलतः निजामशाही में अव्यवस्था फैल गई । यह स्पष्ट हो गया कि फतह खान निजामशाही को छल-कपट करके मुगलों को सौंप देगा । यही नहीं वरन् पुरस्कार के रूप में मुगलों ने उसे शहाजीराजे के आधिपत्यवाला प्रदेश परस्पर दे दिया है । इससे क्रोधित होकर शहाजीराजे ने मुगलों का साथ छोड़ दिया और अपने बलबूते पर मुगलों को सबक सिखाने का निश्चय किया ।

नई निजामशाही की स्थापना : शहाजीराजे ने वजीर फतह खान और मुगल सम्राट को मात देने के लिए निजाम वंश का एक बालक खोज निकाला । उस बालक को जुन्नर के पास पेमगिरी किले पर निजामशाह घोषित किया । इस तरह उन्होंने एक नए राज्य की स्थापना की । इस राज्य में गोदावरी से नीरा तक के प्रदेश थे । अपने इस राज्य की सुरक्षा के लिए शहाजीराजे ने पराकाष्ठा का युद्ध किया । प्रारंभ में आदिलशाह ने इस कार्य में उन्हें सहयोग दिया किंतु आगे चलकर मुगल शासक शाहजहाँ ने दक्षिण में शहाजीराजे पर आक्रमण कर दिया । उसने आदिलशाह को चेतावनी दी । फलस्वरूप आदिलशाह ने शहाजीराजे के विरोध में उससे संधि कर ली ।

अब शहाजीराजे छापामार युद्ध पद्धति से मुगल और आदिलशाह की मिली-जुली सेना से लड़ते रहे किंतु कब तक वे अकेले ही इनसे युद्ध करते ? उनका पक्ष कमजोर होता गया । विवश होकर उन्होंने ई.स. १६३६ में मुगलों के साथ संधि कर ली । शहाजीराजे के लिए समय अनुकूल नहीं था । इसलिए स्वतंत्र राज्य स्थापित करने का उनके द्वारा किया गया प्रयत्न सफल नहीं हुआ । फिर भी उनके इस साहसी प्रयास ने मराठी लोगों में आत्मविश्वास पैदा किया । यही आत्मविश्वास शिवाजी महाराज को स्वराज्य स्थापना के कार्य में लाभदायक सिद्ध हुआ ।

कर्नाटक में जिजाबाई और शिवाजी महाराज : शहाजीराजे की निजामशाही का अस्त होने के बाद मुगल सम्राट और आदिलशाह ने वह प्रदेश आपस में बाँट लिया । शहाजीराजे की पुणे और सुपे की जागीर पहले से ही आदिलशाह के राज्य में थी । आदिलशाह ने वह जागीर अपनी ओर से शहाजीराजे को दे दी । अब वे आदिलशाही में थे । आदिलशाही ने उनपर कर्नाटक प्रदेश को जीतने की जिम्मेदारी सौंपी । शहाजीराजे कर्नाटक चले गए । कुछ समय बाद जिजाबाई और शिवाजी महाराज भी उनके पास चले गए ।

महाराष्ट्र में शिवाजी महाराज का बचपन अस्थिरता में व्यतीत हुआ था । जिजाबाई और शिवाजी महाराज की कभी इस किले पर तो कभी उस किले पर दौड़-धूप चलती रही । उस समय बाल शिवाजी अपने पिता जी की वीरता और पराक्रम की कहानियाँ सुनते थे । कर्नाटक में आने के बाद दोनों को अर्थात माँ-बेटे को थोड़ा आराम मिला । शहाजीराजे ने कर्नाटक के अनेक राजाओं को पराजित किया । अतः आदिलशाह ने उन्हें बेंगलोर की जागीर इनाम के रूप में दी । अब बेंगलोर शहर शहाजीराजे का प्रमुख निवास स्थान बना । वहाँ वे वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे । वे दरबार का आयोजन करने लगे ।

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शिवाजी महाराज का जन्म .... किले में हुआ ।
(पुरंदर, शिवनेरी, पन्हाला)

(आ) आदिलशाह ने शहाजीराजे पर .... प्रदेश को जीतने की जिम्मेदारी सौंपी ।
(कर्नाटक, खानदेश, कोकण)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) जिजामाता के उपदेश से शिवाजी महाराज के मन में कौन-कौन-से विचार आने लगे ?

(आ) शिवाजी महाराज मावलों के बच्चों के साथ कौन-कौन-से खेल खेलते थे ?

(इ) शहाजीराजे ने निजामशाही का त्याग क्यों किया ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) जिजाबाई शिवाजी महाराज को कौन-कौन-सी कहानियाँ सुनाती थीं ?

(आ) शहाजीराजे ने निजाम वंश के बालक को निजामशाह के रूप में घोषित क्यों किया ?

उपक्रम

(अ) शिवनेरी किले की सैर करो । वहाँ शिवाजी महाराज के जन्म स्थल की जानकारी प्राप्त करो ।

(आ) तुम जो पारंपरिक खेल खेलते हो; उनके नाम लिखो । उनमें से किसी एक खेल की जानकारी दस पंक्तियों में लिखो ।

69C5VI

शिवनेरी किला - महादरवाजा